IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भगवान, आत्मा और कर्म: वैज्ञानिक दृष्टिकोण

BHAGWAN, ATMA AUR KARM: VEGYANIK DRISHTIKON

राम चंद्र
पूर्व प्रोफेसर ऑफ़ फिजिक्स
पूर्व वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, नई दिल्ली

ramchandrasrd@gmail.com

एवं

श्याम सिंह
पूर्व प्रोफेसर ऑफ़ फिजिक्स
नामीबिया विश्वविद्यालय

ssingh5121953@gmail.com

ऐब्सट्रैक्ट

इस पेपर में हमनें भगवान,आत्मा और कर्म पर एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने की कोशिश की है। हमने अपनी यात्रा ब्रह्मांड और परमात्मा से शुरू की है। आत्मा की परिभाषा दी है और बहुत सारे रहस्यों को सुलझाया है।

ब्रह्माण्ड और परमात्मा

जिस भगवान ने इस ब्रह्मांड की रचना की वह सुपर ब्रह्मांड में रहता होगा। इस सुपर ब्रह्माण्ड को ही हम परमात्मा कहते हैं। इस ब्रह्मांड को हम स्वर्ग-नरक के नाम से जानते हैं। परमात्मा ने फिर इस ब्रह्माण्ड की रचना की। यह चित्र 1 में दिखाया गया है।इस परमात्मा ने जब हमारे ब्रह्मांड की रचना की तो हमारी धरती पर समय समय पर भगवान भेजे। ये भगवान सभी धर्मो के अनुसार थे। जैसे कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम, कृष्ण, हनुमान, अल्लाह, ईशु, नानक, महावीर, बुद्ध आदि। क्या एक भगवान में इतनी शक्ति नहीं थी?

अब चित्र 2 को देखें। यह भगवान के सुपर कंप्यूटर को दर्शाता है। इस तस्वीर का पूरा कॉन्सेप्ट समझना बहुत मुश्किल है। भगवान् के पास भी एक बहुत ही शक्तिशाली कंप्यूटर है। इसकी स्पीड, स्टोरेज हमारी कल्पना से बाहर है।

यह कंप्यूटर सारे ब्रह्मांड को कंट्रोल करता है जिसमें सभी प्लैनेट्स, प्रकृति, हमारी धरती और हमारी पृथ्वी पर सभी जीव, जंतु और मानव आदि। आप ध्यान दीजिये भगवान निर्मित चीजों में कोई वायरस नहीं है क्योंकि भगवान ने उनको मानव के कंट्रोल से बाहर रखा है। वायरस धरती पर मानव ने बनाया और फैलाया, जिसके कारन दुनियां में इतनी बीमारियां, महामारी, लड़ाई हैं।

मनुष्यों द्वारा निर्मित वायरस

मनुष्यों द्वारा निर्मित कुछ वायरस चित्र ३ में दिखाये गए हैं। इनका संछिप्त वर्णन इस प्रकार है।

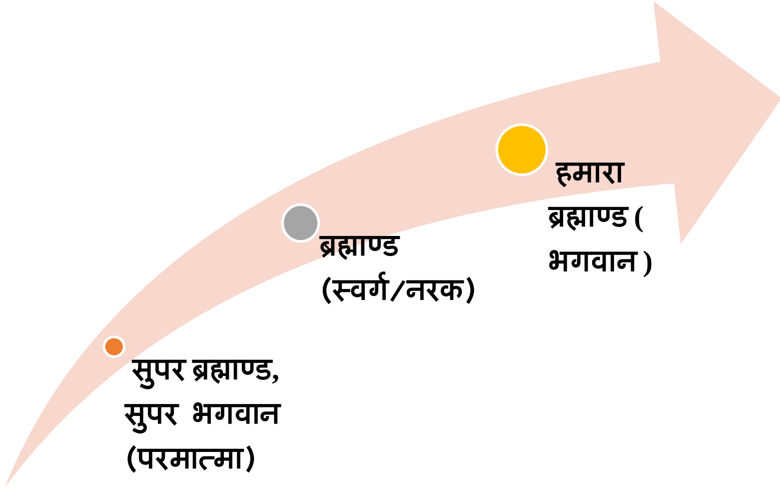

चित्र 1: परम ब्रह्माण्ड और परमात्मा

भगवान का ब्रह्मांड (सुपर कंप्यूटर)			
सभी ग्रह	प्रकृति	धरती	सभी जीवित वस्तुएँ
•कोई वायरस नहीं	•कोई वायरस नहीं	•कोई वायरस नहीं	•केवल मनुष्यों द्वारा वायरस

चित्र 2: भगवान का ब्रह्मांड (सुपर कंप्यूटर)

मनुष्यों द्वारा निर्मित वायरस			
पृथ्वी को राष्ट्रों में विभाजित किया	विभिन्न धर्मों में विभाजित राष्ट्र	विभिन्न धर्मों में विभाजित लोग	अलग-अलग जातियों में विभाजित लोग
•राष्ट्रों के बीच संघर्ष	•लोगों के बीच संघर्ष	•लोगों के बीच संघर्ष	•लोगों के बीच संघर्ष

चित्र 3: मनुष्यों द्वारा निर्मित वायरस

देशों के बीच वायरस

भगवान ने हमको एक ही धरती दी थी, लेकिन हमारे नेताओं ने इसको टुकडों - टुकडों में बांट दिया। अनेक धर्म और जातियों में बांट दिया। अनेक भाषाओं बना दी। इसका परिणाम हम सबके सामने है। आज अनेक देशों में लड़ाई चल रही है। क्यों हम सब मिलकर नहीं रह सकते। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है।

देशों के अंदर वायरस

आज बहुत से देशों में अशांति फैल रही है। यह ज्यादातर धर्म की लड़ाई है। देश को हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई बोद्ध में बाँट दिया है। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों पर अत्याचार करते हैं। हम क्यों नहीं सोचते कि इससे हमारा देश कितना पीछे चला जाएगा।

भारत के नेताओं ने देश को जातियों में बांट दिया है। कोई नहीं कहता कि हम सब भारतीय हैं।

लोगों के बीच संघर्ष (चित्र 4)

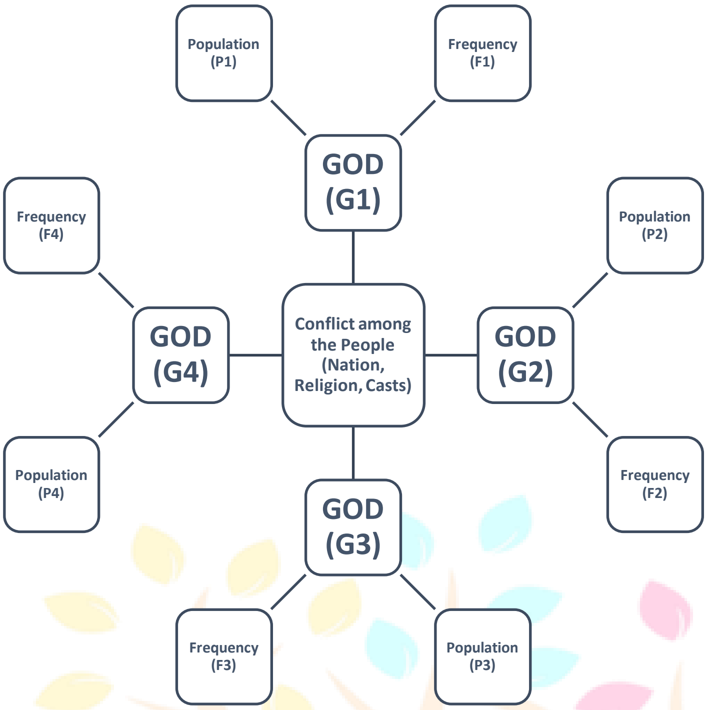

चित्र 4 : लोगों के बीच संघर्ष (राष्ट्र, धर्म, जाति)

हम लोगों ने भगवान की भी जातियाँ बना दीं। हिंदुओं का भगवान अलग। ईसाईयों का भगवान अलग और मुसलमानों का भगवान अल्लाह अलग। हिंदू तो फिर भी भगवान बोलते हैं, इंसाई लोग ईसामसीह, मुसलमान अल्लाह। और फिर आपस में लड़ना, ये प्राकृतिक नहीं है। जनसंख्या P1 (मान लीजिए हिंदू) का भगवान G1 (मान लीजिए राम/कृष्ण/हनुमान/गणेश/शिव/विष्णु/ब्रह्मा) है। यह जनसंख्या P1 आवृत्ति F1 के साथ भगवान G1 से बात कर रही है। इसी प्रकार जनसंख्या P2 आवृत्ति F2 के साथ भगवान G2 से बात कर रही है। देवताओं, आबादी और आवृत्तियों की ये बड़ी संख्या एक ऐसे वातावरण का निर्माण कर रही है जिसे समझना मुश्किल हो सकता है। लोगों से भगवान तक, भगवान से लोगों तक संकेत क्षीण हो सकता है।

भगवान सृष्टिकर्ता है

यदि हम कहें कि भगवान सृष्टिकर्ता है, तो इससे कई प्रश्न उठते हैं, जैसे:

- यदि भगवान ने संसार बनाया तो फिर भगवान को किसने बनाया?
- भगवान ने दुनियां को कैसे बनाया होगा?
- क्या भगवान पक्षपाती है? फिर उसने अपने संसार में एक व्यक्ति को गरीब और दूसरे को बहुत अमीर क्यों बनाया?
- यदि भगवान अनंत आनंद है तो फिर उसने इस संसार को चिंताओं और दुखों से क्यों भर दिया?
- जब बारिश होती है तो क्या भगवान पानी बनाने चले जाते हैं?
- जब आंधी और तूफ़ान आते हैं तो क्या भगवान अपना सिंहासन छोड़ कर इस काम में लग जाते हैं।
- भगवान ने काले गोरे, छोटे, मोटे, दुबले, हर किस्म के लोग क्यों बनाए?

भगवान की भूमिका

भगवान हर प्राणी में शुद्ध चेतना के रूप में निवास करते हैं और जो कुछ भी घटित होता है, उसके ज्ञाता और द्रष्टा बने रहते हैं। वे हमेशा अपने असीम आनंद में डूबे रहते हैं, जो कि आत्मा का आनंद है। अज्ञानता के कारन हम खुद को अपना नाम या अपना शरीर या अपना स्वभाव मानते हैं। हालाँकि, सच्चाई यह है कि इनमें से कुछ भी हमारा असली नहीं है; ये सब केवल कर्म के प्रभाव हैं। अच्छे कारन अच्छे प्रभाव पैदा करते हैं और हमें एक अच्छा स्वभाव, एक अच्छा शरीर और एक स्वस्थ मन मिलता है। दूसरी ओर, बुरे कारन बुरे प्रभाव पैदा करते हैं।

क्या ब्रह्माण्ड की रचना भगवान ने की है? ये एक बहुत ही कठिन प्रश्न है। इसका जबाब हम तीन तर्क से दे सकते हैं।

मनोविज्ञान तर्क

जो लोग भगवान के करीब होते हैं वे जीवन से अधिक खुश होते हैं, भावनात्मक रूप से अधिक स्थिर होते हैं और जीवन में अच्छा करने की अधिक संभावना रखते हैं।

चित्र 5 :

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी तर्क

वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों का मानना है कि जो कुछ भी वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, वह अस्तित्व में नहीं है। चित्र:6

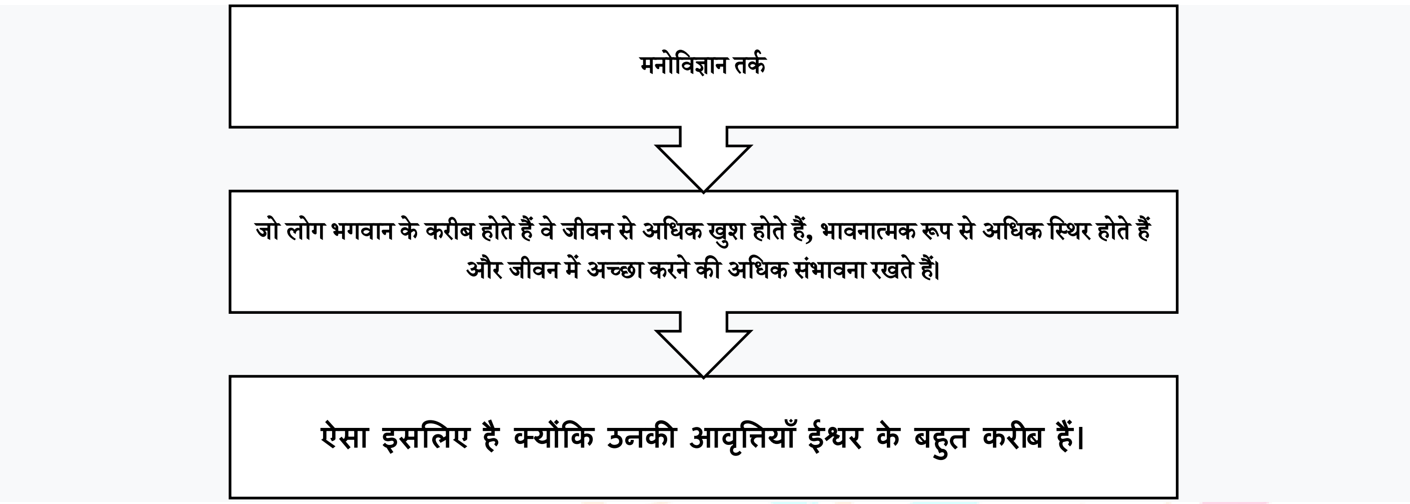

चित्र 5: मनोविज्ञान तर्क

भगवान ने ब्रह्मांड को बनाया

बिग बैंग थ्योरी हमें यह सिखाती है कि

- शुरुआत में शून्य के अलावा कुछ भी नहीं था
- भगवान (दो शक्तिशाली बराबर की फ्रिक्वेन्सी टकराई) और आग जल गई
- जो पदार्थ और प्रतिपदार्थ आपस में बंधे हुए थे वे अलग हो गए
- एक बड़ा विस्फोट हुआ और ब्रह्मांड का निर्माण हुआ (लगभग 14 अरब साल पहले)।
- क्योंकि इस पृथक्करण के लिए आवश्यक ऊर्जा इतनी बड़ी होगी कि किसी बहुत शक्तिशाली व्यक्ति को इसे करना होगा। इसलिए कहते हैं कि भगवान ने ऐसा किया।

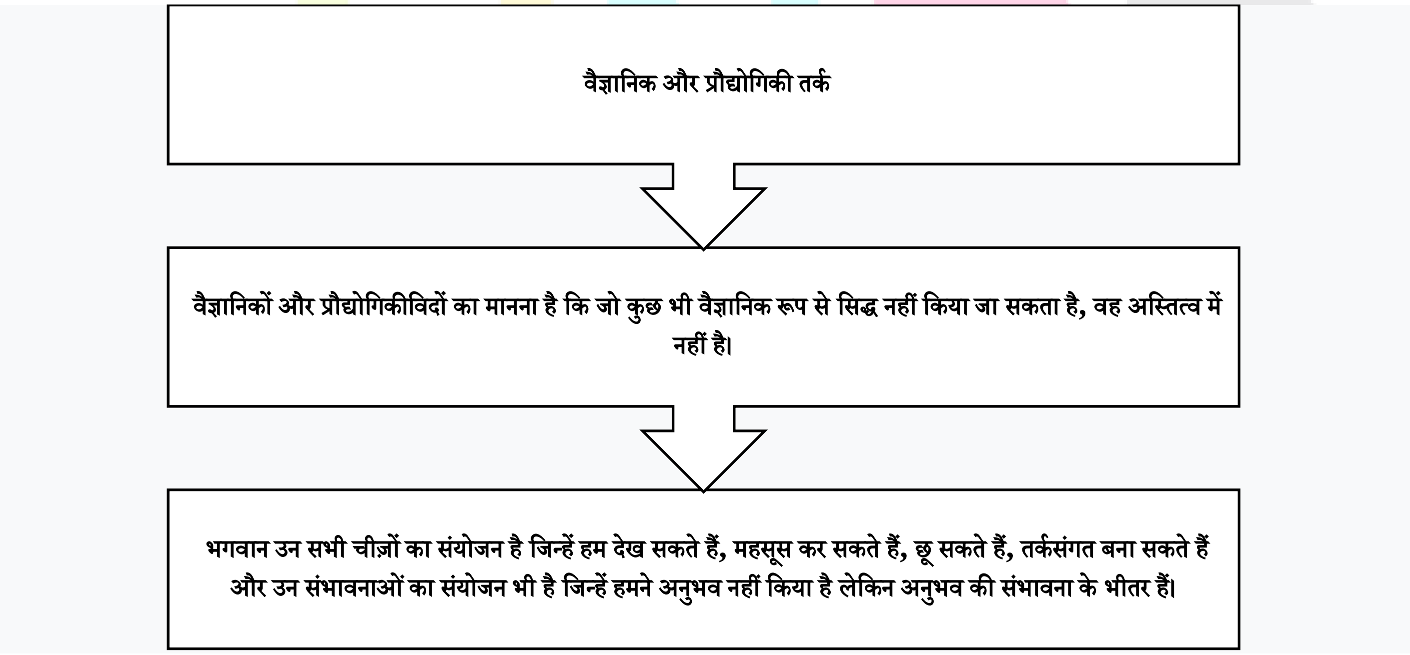

चित्र 6: वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी तर्क

© 2025 IJNRD | Volume 10, Issue 5 May 2025 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

क्वांटम-मनोविज्ञान तर्क

भगवान को किसी ने नहीं बनाया। भगवान की रचना ब्रह्मांड के बढ़ने और बदलने के साथ हुई। भगवान ब्रह्मांड की संचित ऊर्जा है। इसलिए, वास्तव में ब्रह्मांड ने भगवान को बनाया है। चित्र 7 :

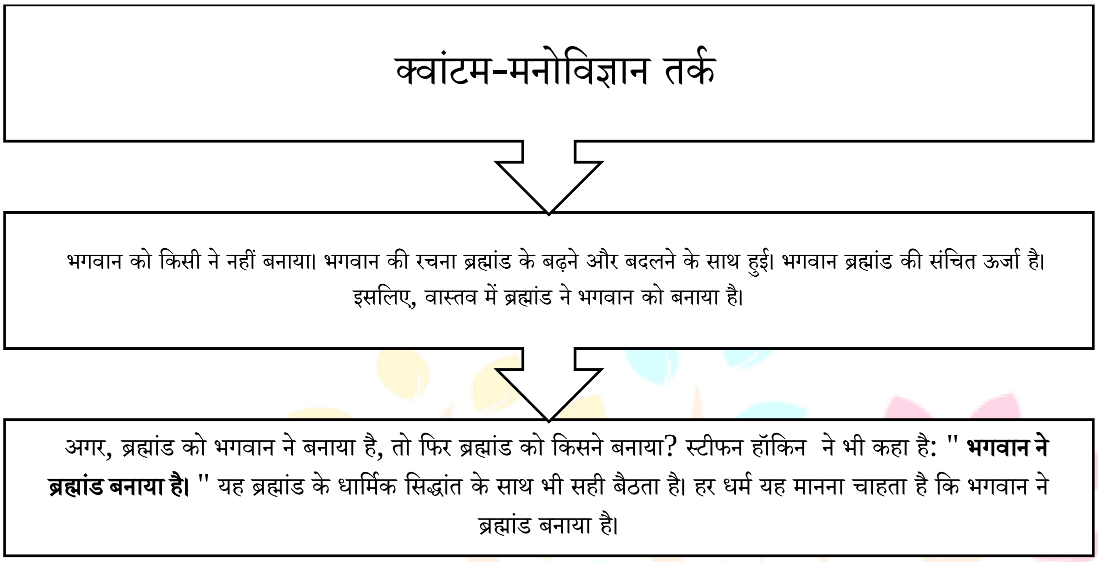

चित्र 7: क्वांटम-मनोविज्ञान तर्क

यह चित्र 8 में दर्शाया गया है।

यह तभी संभव है जब हमारा भगवान जिसने इस ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है, इस ब्रह्माण्ड से बाहर हो। आइए हम इस भगवान के ब्रह्मांड को एक सुपर ब्रह्मांड कहें, जिसे धर्म स्वर्ग कहते हैं। यह बहुत संभव है कि एक स्वर्ग हो जहाँ एक भगवान रहता है, जो इतना शक्तिशाली है कि उसने हमारे ब्रह्मांड को एक परिपूर्ण शून्य से बनाया है। क्योंकि वह शक्तिशाली है, वह इन सभी चीजों को बना सकता है।

इस शक्तिशाली भगवान को किसने बनाया जिसने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया?

यहीं पर धर्म और विज्ञान आगे नहीं बढ़ना चाहते। कोई भी यह सवाल पूछना नहीं चाहता कि ब्रह्मांड को किसने बनाया, इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण यह सवाल है कि भगवान को किसने बनाया।

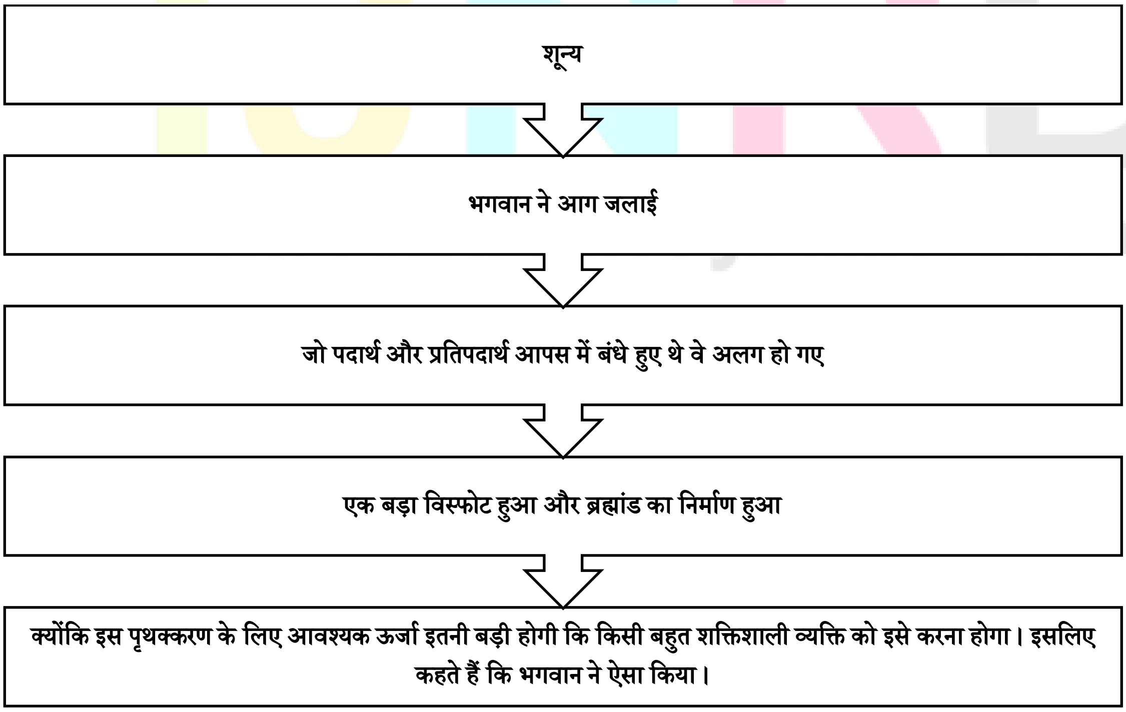

चित्र 8: ब्रह्मांड का निर्माण

- यह विशाल शून्य, जो कि अरबों ब्रह्मांड के आकार का है, में एक उपपरमाण्विक कण पूरी तरह से यादृच्छिक प्रक्रिया के कारन विस्थापित हो गया।
- अब यह दूसरे को परेशान करेगा, जो दूसरे को परेशान करेगा। ये वस्तुएं छोटी हैं और उनकी ऊर्जा भी कुछ भी बनाने के लिए बहुत छोटी है।
- लेकिन जब इनमें से बहुत सारे कण पहले कण की छोटी विकृति के कारन परेशान होते हैं, तो बहुत सारी ऊर्जा पैदा होगी।
- कई कण बाहर निकलने की कोशिश करेंगे, अन्य इसका विरोध करने के लिए एक साथ आएंगे।
- यह चैन रिएक्शन शून्य के भीतर दो समूह बनाएगा, एक जो शून्य को पकड़ने की कोशिश करेगा और दूसरा जो शून्य से बाहर निकलने की कोशिश करेगा।
- यह प्रक्रिया अकल्पनीय ऊर्जा पैदा करेगी।
- अगर आप इस समय इस शून्य के अंदर देख सकते हैं, तो आपको दो अलग-अलग समूह दिखाई देंगे, एक बाहर जाने की कोशिश कर रहा है और दूसरा उन्हें खींचे रखने की कोशिश कर रहा है।
- जो रहना चाहता है वह पदार्थ है, और जो छोड़ना चाहता है वह प्रतिपदार्थ है।
- इस समूह में से किसी में भी अगर कुछ विचलन होता तो परिणाम अकल्पनीय तीव्रता का विस्फोट होता जिसे वैज्ञानिकों ने बिग बैंग कहा।

भगवान किसी की मदद करते हैं या नहीं, यह एक विरोधाभास पैदा कर सकता है लेकिन निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

- यदि करते तो महाभारत का युद्ध रुकवाकर लाखों की जान बचा सकते थे।
- जैसे कंस को मारा, दुर्योधन को मारकर खेल खत्म कर देते।
- ऐसे ही राम रावण को मारकर सीता को घर ले आते।
- सुनामी को रोक देते, रूस यूक्रेन का युद्ध रोक देते।
- दिल्ली की बस में वो हैवानी नहीं होने देते।
- हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, फारसी, जैन, की बजाए एक *मानव कल्याण * धर्म का निर्माण करते तो अच्छा होता।

आत्मा क्या है, ये आपने कभी सोचा है। आत्मा एक ऊर्जा है, जिसे ना पैदा किया जा सकता और ना मिटाया जा सकता है। उसकी फॉर्म को बदला जा सकता है। जैसे बिजली से हम प्रकाश पैदा कर सकते हैं। एक और मुख्य बात, ऊर्जा कांस्टेंट है, दुनियाँ की ऊर्जा को ना कम किया जा सकता और ना ज्यादा।

अब आप समझ गए होंगे कि हम ये क्यों कहते हैं कि आत्मा अमर है, आत्मा कभी मरती नहीं है और ना ही आत्मा को जलाया जा सकता है। आत्मा को यदि हम आवृत्ति या फ्रिक्वेन्सी कहें तो बिलकुल गलत नहीं होगा। आवृत्ति मैच से ही सब कुछ होता है। आप को पता है कि हर चीज कि अपनी एक फ्रिक्वेन्सी (आत्मा, आवृत्ति) होती है। अब आप निम्नलिखित वाक्यों पर गौर कीजिए और सोचिए कि कहीं इनका रिलेशन आत्मा से तो नहीं है।

जब बच्चा अपनी माँ के गर्भ में होता है तो उसके शरीर में हलचल एक समय के बाद ही होती है। यह वही समय होता है जब आत्मा शरीर में प्रवेश करती है। अब यह प्रश्न उठता है कि आख़िर आत्मा ने शरीर में प्रवेश कैसे किया?

जब हमारी मृत्यु होती है तो शरीर को यहीं पर जला दिया जाता है परंतु आत्मा नहीं जलती। कहा जाता है कि आत्मा शरीर को छोड़ कर चली गई है और वह किसी और शरीर में प्रवेश करेगी। परंतु कैसे? अच्छा एक सवाल के बारे में सोचो। एक ताला और उसकी चाबी की फ्रिक्वेन्सी जब इंटरफ्रेंस (व्यतिकरण) करती है, तभी ताला खुलता है। उस चाबी से आप दूसरा ताला नहीं खोल सकते। इसी प्रकार जब आत्मा (फ्रिक्वेन्सी) शरीर को छोड़ कर चली जाती है तो ताला (शरीर) ही रह जाता है। वो फ्रिक्वेन्सी कहाँ जाती है, किस दिशा में जाती है, किस स्पीड से जाती है, पता लगाना असंभाव है।

एक माता पिता के दो बेटे हैं, दोनों की एक जैसी ही देखभाल की गई, समान रूप से दोनों की शिक्षा की गई परंतु एक बेटा डाक्टर बन गया और एक बेटा साइंटिस्ट्स बन गया। परंतु कैसे? इसके कई कारन हो सकते हैं। बच्चों का इंटरेस्ट, माता पिता की इच्छा या प्रैशर। माता पिता का योगदान सिर्फ इतना है कि दोनों (आत्मा) किस तरह व्यतिकरण करती हैं। यह भी निर्धारित हो जाता है की बच्चे का रंग कैसा होगा, चेहरा कैसा होगा।

जैसा कि चित्र ९ में दिखाया गया है, दोनों बच्चों की और माता पिता की **फ्रीक्वेंसी** अलग अलग हैं।

- विश्व में प्रत्येक सेकंड में लाखों बच्चे पैदा होते हैं। अब यह कौन निर्धारित करता है कि कौन सा बच्चा किस देश में पैदा होगा और किस माँ बाप के घर। ये निर्धारित कर सकते हैं की बच्चा और वो माता पिता की फ्रिक्वेन्सी पर निर्भर करेगा।

- दिसंबर २०२४ में साउथ कोरिया में एक हवाई जहाज़ की दुर्घटना हुई जिसमें २८१ यात्री सवार थे। उनमें से १७९ की मौत हो गई और दो बच गए। ऐसा कैसे हुआ?

- एक माँ एक बच्चे को जन्म देती है ठीक समय पर 9 महीने में, पर दूसरी माँ बच्चे को जन्म देती है समय से पहले, 9 महीने से पहले और एक तीसरी माँ बच्चे को जन्म देती है समय के बाद, 9 महीने के बाद। ऐसा क्यों?

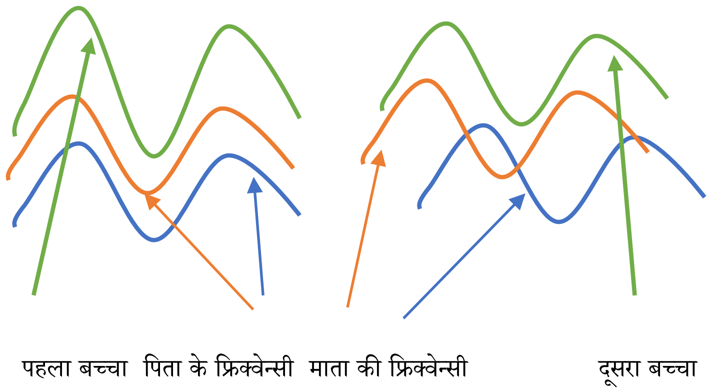

चित्र ९: बच्चा और माता पिता की फ्रीक्वेंसी

उपरोक्त सभी कथनों का संबंध एक ही वस्तु से है और वह वस्तु है आत्मा (सोल)।

आत्मा की परिभाषा

आत्मा एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक (EM) वेव (तरंग) है। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव की एक गति होती है, एक फ्रीक्वेंसी होती है, एक वेवलेंथ होती है और एक एनर्जी होती है। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव की फ्रीक्वेंसी जितनी ज़्यादा होगी उतनी ही ज़्यादा एनर्जी होगी। यह चित्र 10 में दिखाया गया है।

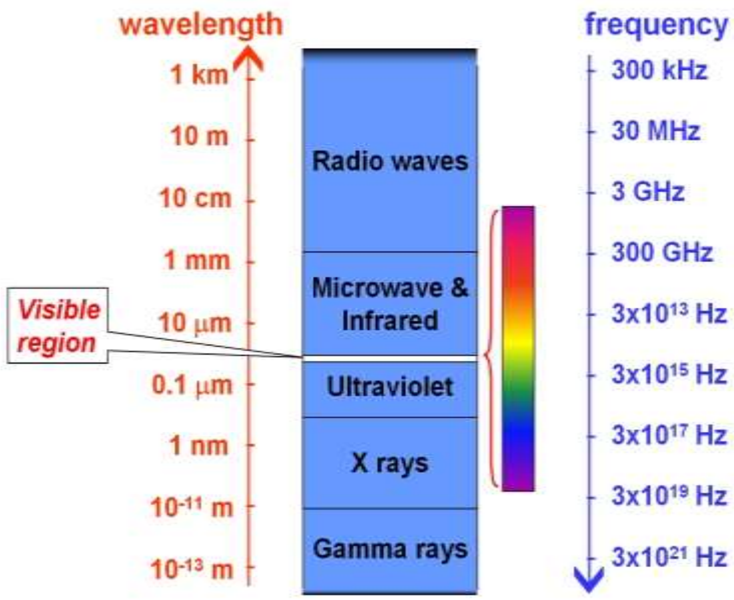

चित्र 10: फ्रीक्वेंसी एंड वेवलेंथ

- इससे ये पता चलता है कि आत्मा की ऊर्जा कम भी हो सकती है और अधिक भी।
- इन्हें ही हम कमजोर आत्मा (कम ऊर्जा) एवम शक्तिशाली आत्मा (अधिक ऊर्जा) कहते हैं।
- ध्यान रहे कि हम आपको फ़िज़िक्स नहीं पढ़ा रहें हैं, परंतु फ़िज़िक्स के माध्यम से ये बताना चाहते हैं कि जब दो आत्माओं (**आवृत्ति या** फ्रीक्वेंसी) का मिलन होता है तो एक घटना होती है और वो क्या घटना होगी ये आत्माओं (**आवृत्ति या** फ्रीक्वेंसी) पर निर्भर करती है। यहाँ ये जानना बहुत जरूरी की हर वस्तु की एक आत्मा, **आवृत्ति ,** फ्रीक्वेंसी होती है, यानि की इसे आत्मा कहो या **आवृत्ति या** फ्रीक्वेंसी, एक ही बात है।

Electromagnetic (विद्युत चुम्बकीय या ईएम) तरंगें, एक प्रकार की ऊर्जा हैं जो अंतरिक्ष में यात्रा कर सकती हैं। वे विद्युत और चुम्बकीय क्षेत्रों से बने होते हैं जो अलग-अलग दिशाओं में कंपन करते हैं। ईएम तरंगें कई रूपों में आती हैं जैसे रेडियो तरंगें, माइक्रोवेव, एक्स-रे, और बहुत कुछ। प्रत्येक प्रकार की अपनी तरंग दैर्ध्य और आवृत्ति होती है जो निर्धारित करती है कि वे कैसे व्यवहार करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि ईएम तरंगों को आगे बढ़ने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है। वे अंतरिक्ष में यात्रा कर सकती हैं या विभिन्न सामग्रियों से गुज़र सकती हैं। इतना जान लेने के बाद आप उपर दिये गए सभी प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं।

आत्मा का शरीर में प्रवेश

सभी फ्रीक्वेंसी की आत्मा पूरे ब्रह्मांड में मौजूद हैं। वे अपने वेग, ऊर्जा से ब्रह्मांड में विचरण कर रहीं हैं। वे एक ऐसी जगह (माता का गर्भ) की तलाश में रहतीं हैं जहाँ वे प्रवेश कर सकें। जब आत्मा को उचित गर्भ (मैचिंग आवृत्ति, ऊर्जा) मिल जाती है तो वह गर्भ में प्रवेश कर जाती हैं। आप कह सकते हैं कि कमजोर माँ- कमजोर आत्मा

तथा शक्तिशाली माँ- शक्तिशाली आत्मा। यहाँ यह भी स्पष्ट करना जरूरी है कि आत्मा को प्रवेश करने के लिए किसी ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं होती है, आत्मा (इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव) कहीं भी प्रवेश कर सकती है।

आत्मा का शरीर से निकलना

अब आप बड़ी आसानी से समझ सकते हैं कि आत्मा शरीर से कैसे बाहर निकल जाती है। यानि कि रिमोट कंट्रोल से आप टीवी बंद कर सकते हो।

परिवार में बच्चों के भिन्न भिन्न गुण

आत्मा अपने सभी पिछले जन्मों का स्मरण करते हुए निरन्तर आगे बढ़ती रहती है। आप कह सकते हैं कि आज जो आत्मा आपके शरीर में है उसमें आपके पिछले जन्म के सभी कर्मों का लेखा जोखा है।

इसको एक उदाहरण से समझते हैं:

आप ६-७ महीने के बच्चे के सामने एक पेंसिल हाथ में लेकर उसके सामने खड़े हो जाएं। पेंसिल बच्चे के सामने करके उसे बतायें कि यह एक हाथी है। बच्चा तुरन्त अपनी मेमोरी को चेक करता है और जब वह पाता है कि वह हाथी नहीं बल्कि पेंसिल है तो वह हँसता है और शायद सोचता है कि देखो मेरा मजाक बना रहे हैं। यहाँ दो बातें हैं। बच्चा अध्यापक पर विश्वास करेगा, दूसरा उसका अनुभव।

इसके विपरीत आप उसे पेंसिल को पेंसिल ही बताएं तो वह फिर अपनी मेमोरी को चेक करता है और जब वह मैच हो जाता है तो वह सीरियस हो जाता है। आपने देखा होगा कि जब बच्चा स्कूल में पड़ने लगता है तो होशियार बच्चा क्लास में सीरियस रहता है। ऐसा इसीलिए होता है क्योंकि टीचर जो पढ़ा रहे होते हैं बच्चा उसे अपनी मेमोरी में जमा जानकारी से मिला रहा होता है। ऐसा होते ही वह उस विषय को आसानी से समझ जाता है।

एक और छोटा सा उदाहरण, आपके घर में टीवी होगा और उसका रिमोट कंट्रोल भी। अब किसी और टीवी के रिमोट कंट्रोल से अपने टीवी को ऑन कीजिये। ऑन नहीं होगा। यही तो फ्रिक्वेन्सी मेचिंग का खेल है। रिमोट कंट्रोल टीवी की आत्मा है, 10 मीटर दूर से टीवी को कंट्रोल कर लेता है।

बच्चा कहाँ और किसके घर जन्म लेगा

पहले यह जानने का प्रयास करते हैं कि एक गुलाब के पौधे पर १० गुलाब के फूल लगे हुए हैं। गुलाब का पौधा तो वहीं रहेगा लेकिन गुलाब के फूलों का क्या होगा यह उनको नहीं पता। हो सकता है कि एक फूल एक माला में लगे और वह माला या तो किसी भगवान के गले में पड़ जाए या फिर किसी दूल्हे के गले में डाल दी जाए, या फिर किसी मुर्दे के ऊपर। फूल जितना शक्तिशाली होगा उतनी ही सुंदर उसकी जगह होगी। क्या आपने कभी गोभी के फूलों की माला पहनी है, नहीं ना।इसलिय बच्चा तो अपनी माता के गर्भ से ही जन्म लेगा परंतु उसकी प्रवर्ती या गुण उसकी आत्मा के अनुसार होंगे।

विमान दुर्घटना में दो व्यक्तियों का बचना

अब तक आप जान चुके हैं कि आत्मा एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव है जिसकी एक फ्रीक्वेंसी, एनर्जी, गति एवं वेवलेंथ है। ये सभी चीजें हमारे अपने-अपने भगवान के पास भी हैं। लेकिन इनमें बहुत अंतर होता है। जिस इंसान की आत्मा की ये चीजें भगवान के आस-पास होंगी वह इंसान उतना ही भगवान के पास होगा।

जब हम अपने भगवान से प्रार्थना कर रहे होते हैं तो हम एक निश्चित फ्रीक्वेंसी से बात करते हैं। अगर वह फ्रीक्वेंसी इतनी शक्तिशाली है कि वह भगवान के पास पहुँच जाए तो भगवान अवश्य सुनेंगे और सहायता भी करेंगे। विमान दुर्घटना में उन दोनों व्यक्तियों के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा कि वे दोनों बच गये। देखें चित्र 11। यह बिलकुल संभव है पर विज्ञान का अभी इनता विकास नहीं हुआ है। यदि आप 5000 साल पीछे चले जाएँ तो भगवान श्री राम ने अपने स्वागवासी पिता से बात की थी। इस्राइल ने अपने घर में बैठे बैठे फिलिस्तीन में छुपे दो आतंकियों को हूरों के पास पहुंचा दिया।

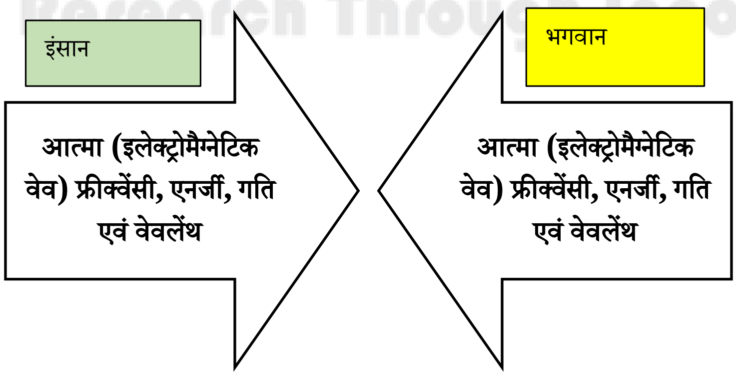

चित्र 11: आत्मा एक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव

ज़ब इंसान कुछ भी अच्छा कर्म करने की कोशिश करता है तो वह भगवान की और एक कदम आगे बढ़ाता है। यानी कि वह अपनी ऊर्जा को संग्रहीत करने की कोशिश करता है। इससे वह अपनी फ्रीक्वेंसी को कंट्रोल करता है और उसे भगवान की फ्रीक्वेंसी के करीब लाने का प्रयास करता है।

इसीलिए गीता में कहा गया है कि कर्म ही पूजा है और कर्म में भगवान बस्ते हैं। देखें चित्र 12।

ऐसे इंसान को हम तपस्वी कहते हैं। जब वह इस क्रिया को लगातार करता रहता है तो वह इंसान एक महान संत बन जाता है और हम उसकी पूजा करने लगते हैं। ऐसे ही महान संत भगवान के करीब होते हैं और भगवान की फ्रीक्वेंसी के समीप पहुँच जाते हैं। समय के साथ ये महान संत ही हमारे आदर्श बन जाते हैं और उन्हें अपना भगवान बना लेते हैं।

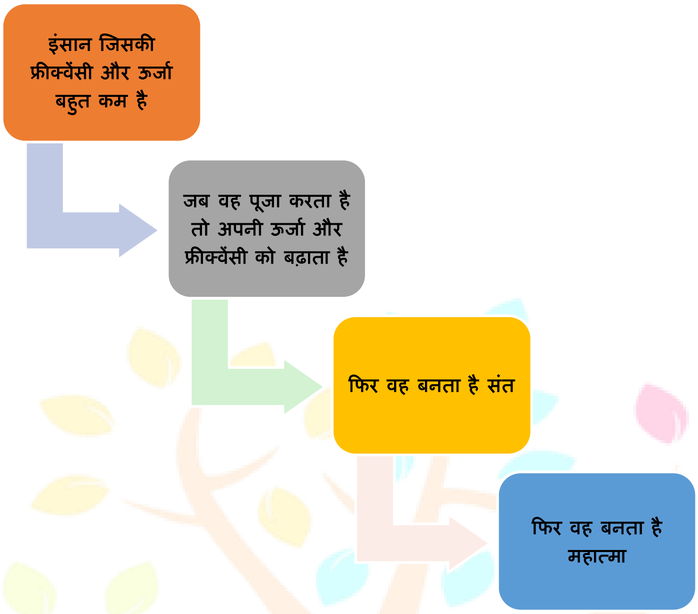

चित्र 12: इंसान, भगवान

सब का समय व स्थान निश्चित है

हम दोनों भौतिकी के प्रोफेसर हैं। हमने अपने जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ देखी हैं जो असंभव लगती हैं। क्या उनका कोई वैज्ञानिक आधार हो सकता है। या वे परम पिता परमेश्वर की कोई रूटीन क्रिया है जो हमारी समझ से बाहर है।

आइये कुछ घटनाओं का जिक्र करते हैं।
यह एक सत्य घटना है जनवरी 2025 की। एक ट्रेन मुंबई से लखनऊ को जा रही है। सभी यात्री आराम से यात्रा का आनंद ले रहे हैं। अचानक अफवाह फैलती है कि ट्रेन में आग लग गई है। कुछ यात्री ट्रेन की चैन खींच देते हैं और साथ वाली पटरी पर कूद जाते हैं। तभी उस पटरी पर तेज गति से ट्रेन आती है और यात्रियों को रौंदती हुई निकल जाती है। 12 लोगों की मौत हो जाती है और काफ़ी लोग घायल हो जाते हैं। अब सोचना यह है कि:

- ये 12 लोग जो कुछ मिनट पहले आराम से यात्रा कर रहे थे क्यों ट्रेन से बाहर निकल गए। ट्रेन में तो हज़ारों लोग थे।
- क्या ये 12 यात्री जो अलग अलग जगह से आए थे अपनी इच्छा से आए थे या इन्हें परमेश्वर ने बुलाया था।
- क्या इन सभी को एक साथ उस स्थान पर लाना संभव है बिना परमात्मा की मर्जी के।
- क्या इसका कोई वैज्ञानिक आधार हो सकता है?
- क्या इन सभी की मृत्यु उसी समय निश्चित थी।
- क्या इन सभी की मृत्यु का समय यहीं निश्चित था।

अगर थोड़ा विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि लगभग एक हज़ार लोगों में से इन बारह लोगों की फ्रीक्वेंसी उस जगह की फ्रीक्वेंसी से मैच कर गई और वे सभी ट्रेन से बाहर निकल आए। आगे क्या होगा ये इनको पता नहीं था। इन सभी की मौत नेचुरल तरीक़े से नहीं हुई थी बल्कि एक दुर्घटना से हुई थी। इन सभी को परमात्मा को याद करने का समय भी नहीं मिला होगा। इसके अलावा किसी भी विज्ञान के लिए यह समझना असंभव है।

एक और घटना का जिक्र करना चाहते हैं। 29 जनवरी, 2025 को मौनी अमावस्या थी। इस दिन महाकुंभ में स्नान करने का विशेष महत्त्व है। इसलिए लगभग रात के डेढ़ बजे एक दुर्घटना होती है। कुछ श्रद्धालु नियमों का उल्लंघन करते हुए रेलिंग तोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं। एक दूसरे पर गिरते चले जाते हैं। लगभग तीस श्रद्धालुओं की दर्दनाक मौत हो जाती है और कई घायल हो जाते हैं।
अब प्रश्न ये उठते हैं:

- क्या उनकी मौत वहीं पर लिखी थी?
- ये लोग भारत के विभिन्न राज्यों से आए थे। क्या मौत उन्हें खींच लाई?
- उनमें कुछ बच्चे भी थे। क्या उनकी मौत ऐसी ही लिखी थी?
- मरने वालो में बच्चे, जवान और बुजुर्ग थे। क्या इन सबकी साँसें इतनी ही थीं ?
- कोई तो है जो इन सबको कंट्रोल कर रहा था। वो और कोई नहीं बल्कि परमात्मा ही है।